॥ श्री गुरुदेव प्रसन्न ॥

लहरी अमृत सागर

-लेखक-

श्री संत जयरामदास उर्फ लहरीबाबा

किंमत

२-५० रु.

॥ श्री गुरुदेव प्रसन्न ॥

लहरी अमृत सागर

-लेखक-

श्री संत जयरामदास उर्फ लहरीबाबा

प्रकाशक :
श्री संत जयरामदास ऊर्फ लहरी महाराज
प्रबंधक लहरी आश्रम,
मु.पो.कामठा,
ता.गोंदिया जि.भंडारा(महाराष्ट्र)

o

प्रथम आवृत्ति १०००

O

सर्वाधिकार प्रकाशक के स्वाधीन

OO

प्रकाशन तिथि १-१२-१९८१

OOO

पुस्तक मिलनेका पत्ता :
श्री संत जैरामदास उर्फ लहरी महाराज
लहरी आश्रम, मु. पो.कामठा
त.गोंदिया जि. भंडारा(महाराष्ट्र)

OO

मुद्रक :
ना. ज. तिडके
तिडके प्रि. प्रेस, गांधीगेट, महाल,
नागपूर-४४० ००२.

O

फोन : ४१९४७

o

किमत २-५० पैसे

श्री संत जैरामदास उर्फ लहरी महाराज
कामठा

आश्रम : कामठा, त. गोंदिया जि. भंडारा

जन्म तारीख ७-१२-१९२२

संदेश

सभी चराचर में निवास करने वाली गुरुदेव शक्ति, भाईयों एवं बहनों " लहरी बोधामृत सागर " नाम की यह किताब आज प्रकाशित होने जा रही है। इसका उद्देश्य यह है, कि आज के जगत में जनता जनार्दन सिनेमा के गीत को ही पसन्द करते हैं और उस रागिनी में ही भूल जाते हैं और अपने जीवन का विकास नहीं कर पाते। इसीलिए मैंने फिल्मी तर्ज पर सुविचारों के गीतों की रचना किया हूँ, ताकि समाज में इन भजनों को गाकर हर आदमी अपने जीवन का कल्याण कर सके। देश और समाज के हित के लिए ही मैंने इस प्रकार के साहित्य की रचना की है। इन किताबों में भाव गीत, भक्ति संगीत, उपदेश पट, राष्ट्र के हित एवं समाज सुधार के विचार रखा हूँ। समय को देखते हुए संत महात्माओ ने अपने वाङमय की रचना कियी है। जमानें के साथ ही परिस्थितियाँ भी बदलती हैं। उनके बुरे विचारों को सही राह पर लाने का काम संत महात्माओं का ही रहता है। आज की नाजुक परिस्थिति को देखते हुए मैंने अपना लेख भजन द्वारा तैयार किया है। इस किताब को पढकर, इन विचारों को भावुक गण अपनें आचरण में उतारें एवं अपने जीवन का कल्याण करें। साथ ही दूसरे के जीवन कल्याण करने का मार्ग दर्शक बनें।

संत जैरामदास

—अनुक्रमणिका—

हिंदी विभाग

क्र.	भजन	पृष्ठ
१	सत्य काम करते	१
२	इस देश के लिये	२
३	उतारे जीवन मे	३
४	समाज देश सेवा	४
५	भजन करने से	५
६	राम कि चिड़ीया	५
७	ओ आत्मा साक्ष	६
८	कथा पढकर व्यथा	७
९	भजन को जिसने	९
१०	शोभा धन की	१०
११	मेरा पिछडा समाज	११
१२	समाज कि जिम्मेदारी	१२
१३	मन की बाते तेरे	१३
१४	पैसो के लिये	१४
१५	मेरा खुन मराठा	१४
१६	तेरे दिलका ये वो	१५
१७	ओ मनके काले	१६
१८	परख नही करते	१७
१९	अपने को अपने	१८
२०	जीवन कि ये	१८
२१	प्रभू है तेरे जैसा	१९
२२	गाओ सतनाम	२०
२३	काम करो तब	२१
२४	सबका भला जो चाहता	२२
२५	जो कुछ भी अपने	२३
२६	जो किसीसे न कुछ	२४
२७	विद्वान ज्ञान से	२५
२८	प्रभू तेरो खेल है	२५
२९	रहे नही शरीर का	२६
३०	मैं दुःखिया तेरे	२७
३१	मेरा मैं हूं मददगार	२८
३२	तेरे चरणो की	२९
३३	जिंदगी की ये फिक्र	३०
३४	नाम जहाज की नैय्या	३१
३५	तु सुख करणी	३२
३६	मैय्या निर्धन की	३३
३७	मेरे नयनो मे	३४
३८	चल चल जरा जरा	३४
३९	भुलादो अपनी	३७
४०	मेरे देश की हालत	३८
४१	एकता मे बल है	३९
४२	भक्तो का भगवान है	४०
४३	जीसने फिक्र न किया	४१
४४	जिसके पास है पक्षपात	४२
४५	दिखने को सुंदर गद्दारी	४३
४६	परीस्थीती से मानव	४३
४७	माटी के पुतले	४४
४८	मेरे गुरुदेव का	४५
४९	सबके दुखडे	४६
५०	जिस भावनासे	४७
५१	जब तक फिटें न	४७
५२	शास्त्र पढकर बने	४८

मराठी विभाग

क्र.	भजन	पृष्ठ
१	निराकारी ते	१
२	भक्तीचा मार्ग	१
३	मन रमे माया	२
४	मागे पडला	३
५	मानवतेची भूल	४
६	ज्याचा जन्म	५
७	जिवनाचे हे रे खेळ	६
८	माझा राम माझ्या पाशी	६
९	शब्द हेची ब्रम्ह	७
१०	ज्याचे पाशी सर्वांचे	८
११	जन्म झाला माझा	९
१२	जिभेवरी सरस्वती	९
१३	जोवरी तत्व ना पटे	१०
१४	सुखाचा दिवस	११
१५	मानवास माणुसकीचे	१२
१६	निष्काम कर्म	१३
१७	देव देवळात	१४
१८	चला आईबापा	१४
१९	शब्दाला जीव	१५
	आरती	

लहरो अमृत सागर

हिंदी विभाग

भजन १ (तर्ज–दु:ख सुख की हरेक माला)

3५६२१

सत्य काम करते करते, अपना प्राण तजेंगे ।
यह प्रण सही राह दिलमे, धरकर प्रभु ध्यान करेंगे ।।टेक।।

आये मुसीबत कितनी, हमारे राहो पर ।
धैर्य न छोडेंगे अपना, संकट आये तनपर ।।
कार्य देश समाजका, करते करते मर मिटेंगे ।। १ ।।

बनी रहे भावना हमारी, अटल सिद्धांत की ।
सबके सेवक बनकर, बात करे हम हित की ।।
बन्धु भाव की झांकी को, सब मे जगायेंगे ।। २ ।।

झुठ और पाखंडीयोसे, हरदम दूर रहेंगे ।
कुटनिती करे हमसे, हम उससे वैसा न करेंगे।।
अन्यायोंसे हरदम टकराते रहेंगे ।। ३ ।।

शिल और नम्रता के गुण सबमे भरेंगे ।
संगठन के पुजक बनके, हिल मिल के काम करेंगे ।
जैराम कहे मानवता से, सबका ही भला करेंगे ।। ४ ।।

२१८६।२५

भजन २ (तर्ज - तेरे मेरे बिचमे)

इस देश के लिये जतन करना देह हमारा ।
धर्म हमारा यही नारा हमारा ॥ टेक ॥

हमारे भुमी पर जब, दुश्मन करे धावा ।
मरेंगे या मारेंगे यही, हमारा दावा ॥
देश की आन बचाने, हुआ भगतसिह दुलारा ॥ १ ॥

सज्जन से सज्जनता की, दिखाये मिताई ।
काम करे ऐसा सबकी, होवे भलाई ॥
दया धर्म सिखाता यही, हिंद, सितारा ॥ २ ॥

देखो रानी झांसी, वाली, वो मर्दानी ।
लडते-लडते देश के लिये, हो, गई कुर्बानी ॥
अमर पद को पा गई, अमीट ध्रुव, ये तारा ॥ ३ ॥

जन्म लेकर भारत मे, संस्कृती न निभाया ।
व्यर्थ ही भू-भार हुवा, जीवन गमाया ॥
आध्यात्मीक की संस्कृती से, जीवन, उजीयारा ॥४॥

कहे जैराम राम को, काम मे देखो ।
संत वाणी को हरदम, दिल मे रखो ॥
इस देश को सती संत, काम है ये, सहारा ॥ ५ ॥

भजन ३ (तर्ज-छु लेने दो नाजुक)

३५६२१

उतारे जीवन मे अच्छे विचार।
मजधार से होगी नैय्या पार ।।
भरी है बुराईयां अपने अंदर।
छोडे तब होगी जगत मे कदर ।। टेक ।।

मन की भावना उज्वल बने।
तब प्रभु तुम्हारी उजर सुने ।।
चलने की सही राह धर।
तभी हो जाये तेरा उद्धार ।। १ ।।

जब तू ही खुद है गंधा।
सारा जग दिखे तुझे अंधा ।।
सभी जीवों की तृप्ती करे।
तब ही मिलेगा जीवन का सार ।। २ ।।

कहे जैराम जग को पहचानो।
अपने पर से पर दु:ख जानो ।।
तेरे पास मे है तेरा मदतगार।
तेरे पास मे है तेरा मदतगार ।। ३ ।।

भजन ४ (तर्ज–खिलोना जानकर)

२।८६ ३

समाज देश सेवा करने को, तैय्यारी दिलसे करले ।
ऐसी है मानव की शोभा, सेवा मे तन को लगाले ॥टेक॥

प्रभु को मिलने मिलाने को, ज्ञान सब हित का करले ।
छोडकर पक्ष पाती सारी ।
प्रभु रुप देखे नर नारी ॥
ब्रम्ह है सबमे एक भरा ।
विश्व है उसका पसारा ॥
होऽऽऽ एक मे अनेक देखो, कही वो दुजा न मिले ॥ १ ॥

अज्ञानता से भोगता दुःख सारा ।
कही ना मिले थारा ॥
फिरा राम चौदा वर्ष फेरा ।
विधी का था वो ही मारा ॥
होऽऽऽ जीव पन जब छूटे तनका, सियाराम कर्ता जानले ॥२॥

खेल है सार असार ।
समझे बीन नाव मजधार ॥
सोने के नाना जेवर ।
तोड मोड करे वो सोनार ॥
होऽऽऽ कहे जंराम ब्रम्ह एक, किधर से कोई भी तौले ॥३॥

भजन ५ (तर्ज– फुल तुम्हे भेजा है) 3५६२१

भजन करनेंसे सज्जन बनोगें, जीवन बनेगा वो उज्वल ।
दुःख संकट ये टल जायेंगे, बढेगी शक्ती आत्म बल ।।टेक।।

सब जीवो से मित्र भावना ।
मिट जायेगा ये मी तु पना ।।
श्रद्धो की इन लहरो मे ।
शब्दो का होवेगा मोल बना ।।
तेरे जीवन के पथ पर ।
प्रभू बनेंगे साथी तेरे ।।
सब जीवो से प्रिती जुडेगी, कही न पडेगी ये हलचल ।। १ ।।

राम रतन धन पाने आया ।
कंचन सी काया को भुला ।।
इसमे जल जायेगा फिर तु ।
होगा न तेरा इससे भला ।।
जैराम दास कहे चेतना प्यारे ।
सत से नाव लगाले किनारे ।।
आखीर ये तन छुट जायेगा, रोवेगा तु हाथ मल ।। २ ।।

भजन ६ (तर्ज– रामने सबको काम दिया)
राम की चिडीयाँ राम का खेत ।
मुर्ख अज्ञानता, से चेत ।। टेक ।।
दुनियाँ पलती एक के बलपर ।
क्यो करता है, तु छल बल ।।
भक्त तर गये, नाम लेन ।। १ ।।

खेल रचा है ये संसार ।
भेद है सारा सार असार ।।
समझे बिना ये मिटे ना खेद ।। २ ।।

अज्ञानता से कहता मेरा ।
माया ममता ने डाला घेरा ।।
दुनिया देखकर भुला स्वहित ।। ३ ।।

जैरामदास कहे दो राहे ।
जिस और मुडे वैसा फल पाये ।।
भला इससे, जोड ले प्रित ।। ४ ।।

भजन ७ (तर्ज–सजन रे झुट मत बोलो)

ओ आत्मा साक्ष रखकर बोल ।
शब्द का प्रभु रखे तोल ।।
कही न होवे वचन का पोल ।
तेरा होवे जगत मे मोल ।। टेक ।।

मन मे भाव हो उजले ।
दुध मे पानी जैसे मिले ।।
शिल नम्रता हो दिल मे ।
श्रद्धा भाव हो सब जीवो में ।।
सभी का भला जो चाहता, उसी से प्रीती तु रे जोड ।।१।।

धर्म का कर्म जाने बिना।
मिले ना मर्म ईश्वर का ॥
तत्व को परखें बिना।
ज्ञानी का लगे ना ठिकाना ॥
संयम हो अपने इंद्रियों पर, कही ना होवे मन हलचल ॥२॥

पर दुःख को अपना कहता है।
वही सब कुछ पा जाता है ॥
पडे ना कही कमतरता।
वही मानवता निभाता है ॥
सभी का हित जिसके पास, विश्व चलता उसके बल ॥ ३ ॥

कहे जैरामदास सत पथ पर।
चलने को कभी ना भूले ॥
सेवा मे तन को लगा लो।
मुख से राम नाम बोलो ॥
यही मार्ग है भक्तीका, बने जीवन उज्वल ॥ ४ ॥

भजन ८ (तर्ज- मुझे कितना प्यार है)

३४५२१

कथा पढकर व्यथा न लगाओ।
कही शांती न मिल पाये ॥
भ्रम भ्रम मे उमर बिताये, कुछ भी न हाथ मे आये ॥ टेक ॥

अर्थ का न मर्म समझे।
व्यर्थ का ये गाल बजाये ॥
थोथी बाते बकते रहते।
ना कुछ सार मिल पाये ॥ १ ॥

भेद भेद का खेल पडा हैं ।
जीवन दुविधा मे अडा है ।।
पर आत्मा की परख न जिसको ।
हरदम ये गोते खाये ।। २ ।।

रामनाम ये रटता तोता ।
अपने को ना वो परखता ।।
दुजे बोल पर विश्वास रखता ।
कही सफलता न मिल पाये ।। ३ ।।

बाहर तस भीतर देखो ।
साक्षीओंसे जाकर सिखो ।।
आत्म तत्व को हरदम परखो ।
जाने बिन ना मुक्त होवे ।। ४ ।।

जैरामदास कहे ।
कागज मे जागत ।।
आकार निराकार मे ।
बस है एक ही अर्थ ।।
समझे बिन ना भ्रम मिटे, ला खो प्रयत्न कर पाये ।। ५ ।।

भजन ९ (तर्ज–छु लेने दो नाजूक)

भजन को जिसने हजम न किया ।
संग्रहणी का मरीज भैय्या ॥
राग रागीनी से दुनिया रिझाया ।
आत्म तत्व को नही पाया ॥ टेक ॥

बुद्धि जीवी का बुद्धि पर भरोसा ।
पढत ज्ञान पर वो रखे आशा ॥
अर्थ का ये मर्म ना समझे, एक दिन ढल जाये काया ॥१॥

कृत्रीम ज्ञान का लिये डिप्लोमा ।
दिलमे रखते है गर्व गुमां ॥
चेतन तत्व को समझे बिना, ये मोक्ष पद ना पाया ॥ २ ॥

सार असार से बना संसार ।
अणु परमाणु का है व्यवहार ॥
अजन्मा अविनाशी अकृती शक्ती,हंसा ने पानी दुध अलग किया॥ ३॥

आत्म तत्व का अध्ययन करने से ।
जीव छुटे जन्म मृत्यू से ॥
जैरामदास कहे गुरु वाणीसे, आत्म तत्व को दर्शाया ॥४॥

भजन १० (तर्ज–जिससें लगी लगन)

शोभा धन की जो देखना चाहता है ।
ज्ञान से ही सुख शांती पाता है ॥ टेक ॥

त्याग बिना ना वैराग्य आये, न्याय बिना ना भक्ती ।
जब तक छुटे ना पक्षपाती, तब तक भरी कुटनिती ॥
मानवता का नाता निभाता है ॥ १ ॥

सतसंग बिन विवेक न होवे, ब्रम्ह बोध बीन मुक्ती ।
तत्व ज्ञान को ना परखे तो, कैसी मिले प्रचिती ॥
गुरु के वचन को निभाता है ॥ २ ॥

विषयानंद का छुटे ना छंद, मिले ना परमानंद ।
राम नाम की चढे ना धुंद, मेंढक सुंगे ना मकरंद ॥
तन की सुध-बुध खो जाता है ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे रे बाबा, भगवान भक्त की शोभा ।
जागृत स्वप्न मे ईश्वर नाम की, चलती जिसकी जुबां ॥
वही निर्वाण पद को पाता है ॥ ४ ॥

२१४२ २५

भजन ११ (तर्ज– मेरी छोटीसी है नाव)

मेरा पिछडा समाज, इसे बदल देना आज।
उंचा होवे देश सरताज रे ॥ टेक ॥

पडेना कमतरता किसी चीज की।
निती जुडी रहे मानवता की ॥
दिलमे रहे बंधुभाव, प्रेम का पडेना अभाव।
तभी रहे देश की लाज रे ॥ १ ॥

जिम्मेदारी अपनी आप निभाये।
फुकट का कोई किसका न खाये ॥
तन मन से करे काज, तब टिका रहे राज।
मिले सभी जीवों को मौज रे ॥ २ ॥

अज्ञानी को ज्ञानी ये ज्ञान बांटे।
द्वेष भाव का तब ये क्लेश मीटे ॥
होगा समाज सुधार सब का होगा उद्धार।
कोई ना रहे अनजान रे ॥ ३ ॥

ज्ञान की बाते सबके हित की।
निती भरी मानवता की ॥
बने स्वावलंबी जीवन करे संतो का ये संग।
मुख से हरी नाम भज रे ॥ ४ ॥

अध्यात्मीक ज्ञान से सुख शांती मीले।
धैर्य हिम्मत कभी ना फिसले ॥
कहे दास जैराम नेकी से करे काम।
निभाओ अपना फर्ज रे ॥ ५ ॥

२१५३/२५

भजन १२ (तर्ज – कहीं मानो भारत)

समाज की जिम्मेदारी है, संतो के हाथोमे ।
बुराई से बदल करके लाना, सही राहो मे ।। टेक ।।

नेकी का ये पाठ सिखाये ।
एकी का ये ज्ञान दिलाये ।।
द्वेष भाव को मीटा करके, बदलते मानवता मे ।।१।।

समय सुचक बाते हितकी ।
सभी प्राणी के कल्याण की ।।
बंधु भाव का नाता निभाकर, सुख मिले जीवनमे ।।२।।

व्यवहार करे इनामदारी से ।
बचकर रहे बुराई से ।।
कर्म धर्म का मार्ग सिखाये, मन रहे हरी भजन मे ।।३।।

समता का ही नाता जोडे ।
कही ना आवे राहो मे रोडे ।।
आत्मा-आत्मासे प्रिती जुडें, ये ही विशेष गुण उनमे ।।४।।

विश्व आत्मा संतो की जाने ।
अपने परसे सभी को चिन्हे ।।
जैरामदास कहे रे बाबा, घिसे शरीर परहीत मे ।।५।।

आशावली ३ —

भजन १३ (तर्ज-अगर है ग्यान को पाना)

मन की बाते तेरे भावना की, समझता हु तत्व बोल की।
मुझसे छुपी नही चालाकी, कोशीश मतकर छुपाने की ॥टेक॥

अंदर बाहर साक्षी वो आत्मा।
जागृती और सपनो मे ॥
भरा हुआ है रहस्य।
भुत भविष्य वर्तमानो मे ॥
खुली है जिसकी दिव्य दृष्टि, रही ना उसे कुछ बाकी ॥१॥

समझे मत उसे भोंदू पगला।
भरा है ज्ञान उजियाला ॥
तू है जब मन का काला।
कैसा होवे तेरा भला।
परखा नही दया धर्म, हानी किया जिवन की ॥२॥

जैराम कहे अंदर उजला।
बाहर भी है उजला ॥
उसीके पास मे ही है।
मानवता की सच्ची सलाह ॥
वो ही सबका हितवाला, राहे बतलावे तरने की ॥३॥

34521

भजन १४ (तर्ज– बेकरार करके हमे यूं न)

पैसो के लिये देखो मानवता बिकी ।
अधर्म के तरफ ये दुनिया झुकी ।। टेक ।।

इनामदारी का ये निकला दिवाळा ।
झुठ मुठ वाले का है बोलबाला ।।
आदर्श को भावना हो गई फिकी ।। १ ।।

भ्रष्टाचार फैला कुकर्म की बेला ।
जाने नही दया धर्म छलकी ये कला ।।
निर्दयी व्यवहार से जनता दुःखी ।। २ ।।

जिसको शहाणा वो हुवा दिवाना ।
स्वार्थ का वो हरदम गाये ये गाना ।।
मुखसे बात निकले ना कभी न्यायकी ।।२।।

जैरामदास कहे इससे होगा विनाश ।
प्राचीन कालका ऐसा है इतिहास ।।
मन मैला धोलो हो जावोगे सुखी ।। ४ ।।

34501

भजन १५ (तर्ज– तेरे जैसा यार कहां)

मेरा खुन है मराठा, कर्तव्य से कभी ना हटा ।
देशधर्म के लिये डटा, अधर्मिको हरदम पिटा मेरा ।।टेक।।

खाना मुफ्त का भाये, तनको हरदम झिजावे ।
बलबुत्ते पर अपने, हमेशा ही जीये ॥
सज्जन के लिये हू मिठा ॥ १ ॥

भाईचारा का मेरा नाता, पुरखोंकें वचन निभाता ।
दिल ही से समायी रहती शिल और नम्रता ॥
दु:खियो के लिये तन लुटा ॥ २ ॥

चिड अन्याय पाखंडीकी, उनके दुष्ट कर्मोंकी ।
ना सुनी बात कभी भी मैंने अन्यायकी ॥
उनसे रहा हरदम रूठा ॥ ३ ॥

जैराम कहे सतपर भरोसा, जाती पाती से नही नाता ।
सद्गुण है मेरा दाता और विधाता ॥
उनके चरणोंमे रहा झुकता ॥ ४ ॥

भजन १६ (तर्ज– तेरे जैसा यार कहां) अरहरकाँड–

तेरे दिलका ये वो दिलदार, बैठा है तेरे अंदर यार ।
कहां ढूंढ रहा है गंवार, कैसा मिले वो मददगार तेरे ॥ टेक ॥

ये खेल दुनियामे आकार निराकार ।
बनाकर रखा है नाम संसार ॥
मोह ममता के जाल मे, डालकर रखा है पतवार ॥ १ ॥

सु–कर्म मे ही उसकी रहे प्रिती ।
देवे हमेशा सबको वो तो शाश्वती ॥
प्रेमी का बनकर वो साथी, नैय्या करे वो भवपार ॥ २॥

मदत पहले खुदकी करना सिखो।
खुद मे ही हरदम खुदा को देखो।।
किसी जिवका द्वेष ना रखो, तभी मिले जिवनका सार ।। ३ ।।
अच्छे भाव जैसे आये तेरे मन मे ।
वैसा हि दिखे हरपल नैनी मे ।।
कहां ढुंढ रहा बन बन मे, करले सत्यका व्यवहार ।। ४ ।।
कहता जैराम प्रभूको जान ।
ये बात नही भाई इतनी आसान ।।
पहले आत्माकी ले ग्वाही, तेरा तु ही है साक्षीदार ।। ५ ।।

भजन १७ (तर्ज- ओ मनवा रे....)

ओ मनके काले, मायामे भूले ।
विवेक दृष्टि खोलके, तूं स्वरुप अपना देखले ।। टेक ।
कौन है ये तेरा, यहां कहता है मेरा ।
संसार सागर मे, खोवे जिवन सारा ।।
जिस कारण आया यहां, दिलको परखले ।। १ ।।
जनम-जनमका भुला भटका मुसीबत मे आया ।
कोटी कोटी योनी भोगके नर जनम पाया ।।
जाग जा रे अब तो भी बिगडी बनाले ।। २ ।।
मदतगार तूं ही तेरा, पर आंस क्यों पकडा ।
भ्रमणा मे जाये भुला, खोये उमर सारा ।।
समय निकल जाये तेरा, रहे हात मले ।। ३ ।।
जो जैसा कर्म करे, वो वैसा ही पावे ।
अंत समय मे उसके, वही काम आये ।।
जैराम दास कहे, ध्यान तूं रखले ।। ४ ।।

भजन १८ (तर्ज– गरीबोकी जिंदगी भारी सजा)

34}21—

परख नही करते ये न्याय अन्याय की ।
बफादारी दिखाते अपने लोकोकी परख ॥ टेक ॥

चाहे वो कितना गुंडा बदमाश रहे ।
उसके पापो को वो हरदम छुपाये ॥
तरफदारी करते है उसके पक्षकी ॥ १ ॥

सज्जन कुचला जाता आज बिचारा ।
कही ना मिले ठिकाणा, घुमता मारा-मारा ॥
तडप-तडप कर होता होता है हरदम दुःखी ॥ २ ॥

निती पर चलता है उसका साथी ही बिरला ।
अनिती से चलता है उसका बोल बाला ॥
रहम नही आती उसको किसीकी ॥ ३ ॥

ऐसा ही फैला है जगभर व्यवहार ।
अघटीत घटना घट रही पृथ्वीपर ॥
चढी बढी बाते करे क्रोध की ॥ ४ ॥

जैराम कहे निकल रहा ये भाईचारा ।
कैसा बचेगा समाज ये हमारा ॥
नही जागे तो पाळी विनाशकी ॥ ४ ॥

भजन १९ (तर्ज- मन मैला और तनको)

अपने को अपने आप पुजा, देखा नही कहीं देव दुजा ।।
पाई अपने आप मजा, मिली सब ठिकाने रजा अपने ।। टेक ।।

न मैं मरनेवाला हूं, न मैं जनमने वाला हूं ।
अपने आप देव हुआ फिदा, जाती पातीसे निराला हूं ।।
मैंने मोह माया तजा, जनम-मरण किया वजा ।। १ ।।

मै हकीम हूं, मै रोजी हूं, मैं जोगी हूं, मै भोगी हूं ।
मै ही मुलजीम, मैं ही न्यायधिश, मेरा मै ही खुदा हूं ।।
संत की कृपा से सुझा, दृष्टा, सृष्टा की लेऊ मजा ।। २ ।।

मैं आकार नही, निराकार नही, मैं ना स्वरुप से भिन्न हूं ।
मै छोटा नही, मैं बडा नही, मेरा मैंने अजमाया हूं ।।
आशा तृष्णा मैने तजा, दशम द्वार का खुला ताला ।। ३ ।।

गुरुदेवने बनाया मतवाला, मैंने गुरु नाम भजा ।
जनम जनम ना फेर सकुं, अपने गुरुदेवका कर्जा ।।
कहे जैराम भेद गुरुसे मिला, देखा आपने मजा ।। ४ ।।

भजन २० (तर्ज-मधुबन खुशबु देता है)

जिवन की ये हर क्षण मे, मौत तेरी है खडी ।
किस गफलत मे, भुला पगले, बाते करता चढी बढी ।।टेक।।

न किसकी रात है, न किसका दिन है ।
छाया हे यहां सारा, माया का अंधकार है ।।
अंत मे ना मिलता है कोई, मनकी बाते मनमे रहगई धरी ।। १।।

स्वप्न सुख की देखे मजा, दृष्य जगत मे मिले सजा ।
मृग तृष्णा कैसे बुझे, विष के लिये अमृत तजा ।।
जनम मरण की बेडी पडी, प्रभूसे भी ना प्रित जुडी ।।२।।

काल भंवरा मंडरा रहा, मौका अपना देख रहा ।
निंदीया में तू सो रहा, उमरीया सारी खो रहा ।।
जैराम कहे राम बीन, जनम मृत्यू की तुटे बेडी ।। ३ ।।

भजन २१ (तर्ज– सजन रे झुठ)

प्रभू है तेरे जैसा, भावना का है भुखा प्यासा ।
लगे न उसको, सोना चांदी पैसा,
हर घट में उसका बासा ।। टेक ।।
शोधले तू अपने मनमे,
देखले तू अपने तनमे ।।
वो बसा नही बनमे ।
नही है वो तिरथस्थाना ।
खोजी हो तो तुरत मिल जाये ।
घुमो मत मृग घासा ।।१।।
प्रकृती से हम है भिन्ना ।
तत्व से हम एक है जान ।।
जब मिले सत्‌गुरु से ज्ञान,
टूट जाये जन्म मरण फासा ।। २ ।।
कहता है जैराम दास ।
बहु दया होवे पास ।।
शिल नम्रता की हो शिस्त ।
उसको मिला इस मर्म का रस्ता ।।३।।

भजन २२ (तर्ज- यहां वहां सारे)

गाओ सतनाम, दिल खोलके
टूट जायेंगे फेरे जनम मरण के ।।टेक।।

मनकी हो निर्मल वृत्ती, आतम तत्व के पाने मोती ।
निरामय हो तुम्हारी मती, चकोर तरसे बुंद स्वाती ।।
भक्त प्यासे रहते, हरदम ब्रम्ह रसके ।।१।।

द्वेष भाव को आगे संहारे, काम क्रोध का बकरा मारे ।
आत्माराम से प्रिती जोडो, सब जिवों को कहदो हमारे ।।
बोल तुम ऐसा बोलो, सब को ही मिले शांती ।
अमृत रस भरा हो उसमें, जिवकी मिटे भ्रांती ।।
पिर पराई न जाने तो ज्ञानी रह अधूरे ।।२।।

संयम और नियम का, मन पर लगाओ डंडा ।
चंचल मन हो जाये थंडा, भेद भाव का फुटेगा हंडा ।।
हर तरफ देखो, फिर प्रभुके नजारे ।।३।।

जैरामदास कहे, तुम्हारी बिगडी वो बन जाये ।
सोये किस्मत सोये किस्मत, को आजमाले ।।
सतसंग से ही जिवन सुधारले ।।४।।

भजन २३ (तर्ज - गोरे गोरे चांद से) २।७५/२५-

काम करो तब भोजन पाओ।
तभी समाज सेवक कहलाओ ।। टेक ।।

आगे तुम सुधरोगे जग सुधरेगा।
तुम बिगडोगे तो जग बिगडेगा।।
मन मे उंचे भाव धरो, किसी का मुफ्त न खाओ ।। १ ।।

पर धन पर जो मजा उडावे।
वो ही चोर डाकु कहलाये ।।
किमत न होवे उसकी, जगमे, झुठी गाल न बजाओ ।।२।।

देखकर तुम्हारी सत्य निती।
जनता तुमसे करेगी प्रिती ।।
तन जाने पर किर्ती रहे, अमर नाम को छोड जाओ ।।३।।

अज्ञानी जनता को संतसंगमे लगवाया।
संत तुका, मिराबाईने, ज्ञानामृत पिलवाया ।।
देश धर्म का विकास होये, ऐसा नारा लगाओ ।।४।।

जैरामदास कहे सुन भाई।
दया धर्म मे मिले रघुराई ।।
कुटनिती को तुम छोडो, पर दुःख अपना कहलाओ ।।५।।

34521

भजन २४ (तर्ज-मेरे टूटे हुये)

सबका भला जो चाहता ।
खुश है उसपर विधाता ।।
पडे न कही कमतरता, किधर भी वो मुड जाता ।। टेक ।।

निती से प्रित जोडा ।
मोह ममता से मुखडा मोडा ।।
दिनो का पिवे दु:खडा, वो ही है सबका विधाता ।। १ ।।

श्रध्दा भाव उज्वल हो जिसके ।
प्रभु वंशीभूत हुवा उसके ।।२
किया काम सारथी बनके, भक्तों के साथ वो रमता ।।२।।

शिस्त का हो रंगीला ।
ब्रम्ह रस का पिवे प्याला ।।२
उसने ही ब्रीद को संभाला, हर जगह प्रभू को पाता ।।३।।

कहता है जैरामदास ।
धरी न कंचन कामिनी की आस ।।
प्रभू उसके पास वो ही बुझाये सबकी प्यास ।
किर्ती अमर छोड, निर्वाल पद को पाता ।। ४ ।।

ગૈરો ૧૨૭ રાગસે પ્યાર

भजन २५ (तर्ज– छू लेने दो)

१२७/१/१

जो कुछ भी अपने को मीला ।
उसमे गुजर करो यही मेरी सलाह ।। टेक ।।

यह मन है बडा पाजी मतवला ।
हर वक्त जीव के पिछे लाये बला ।।
ऐसा है यह बावला ।। १ ।।

इसके है यह पैनी धार ।
इसकी चाल बडी रफ्तार ।।
ज्ञान बुद्धि को दे भुला ।। २ ।।

जब यह स्थिर होवे ।
मानव सुख शांती को पावे ।।
पिवे ब्रम्ह रस का प्याला ।।३।।

नर का नारायण बनावे यही ।
मोक्ष की डगर दिखाये सही ।।
ऐसी है इससे कला ।। ४ ।।

स्वर्ग–नर्क इसके हाथ ।
विचार विवेक से करो साथ ।।
नाव का ये है मल्लाह ।। ५ ।।

जैराम कहे मन मेरा गुरु ।
भाव सिंधू से यही उतारु ।।
आत्म तत्व से हो मिला ।। ६ ।।

भजन २६(तर्ज- सकुल मे तुम क्या)

जो किसीसे न कुछ मागता, हो रामा,
वही हमारा देवता ।
उसके चरणो मे है माथा, हो रामा,
हमको वही भाता ॥ टेक ॥

जिवन नैय्या, का सहारा, उसे ही है
तन मन सारा दे दिया है ॥
सुख शांती का किनारा पाया है ।
युग युग का जोडा नाता, हो रामा,
वही हमारा विधाता ॥ १ ॥

कोई जाये तिरथ मंदिर, बसायी है ।
एक ही तस्वीर इन नयनोमे ॥
तकदीर अजमायी इन चरणोमे ।
ज्ञान गंगा मे गोते लगाता, हो रामा,
सतसंग से प्यास बुझाता ॥ २ ॥

ब्रह्म रसकी भरी वाणी, सुन करके बोल ।
अडानी भी बन जाये ज्ञानी ॥
अमर रहे उसकी कहानी ।
जैराम गुरुपे भरोसा, रखता हो रामा,
वाल्या वाल्मीक कहलाता ॥ ३ ॥

भजन २७ (तर्ज- जब आ ही गये हैं)

संत लक्षण

विद्वान ज्ञान से जाना जाये, आत्म-ज्ञान से साधू कहलाये।
स्वहीत की बाते दर्शायें, निर्गुण का ही गाना गाये विद्वान ॥टेक॥

लुटे आनंद सच्चिदानंद का, न्यौछावर किया तन-मन का।
माटी सोना देखे एक जैसा, भरभर प्याला पिवे ब्रम्हरसका।
अखंड शांती वो पावे, जन मे जनार्दन कहलाये विद्वान ॥ १ ॥

मतवाला बना अपने धुनमे, तिन लोक बसाया नैनोमे।
सत् को देखा जड चेतन मे, पाया हैं आपको अपनेमे ॥
कमल पर पानी ना ठहरे, रहकर जगमे निराला कहलाये।
विद्वान ॥ २ ॥

स्वनिर्मीत भाषा कहे जैराम, वहां ही मिले हमको विश्राम।
संतो के ज्ञान मे चारो फल, पाने से मिले वो मोक्षधाम ॥
उनकी बानी टले ना कभी, आसमान भी चाहे टल जाये।
विद्वान ॥ ३ ॥

भजन २८ (तर्ज- जब जब तुम मेरे)

प्रभू तेरो खेल हैं अचरज भारी।
क्या जाने हम संसारी ॥ टेक ॥

एक बुंद से विश्व बनाया।
पंच तत्व कारागिरी ॥
तिन गुण धरे हैं सबमे, और माया नाम धरी ॥ १ ॥

पृथ्वी, आप, तेज, वायु, आकाश ।
ब्रम्ह चैतन्य निराकारी ॥
हाड, मांस रूधीर भरा हैं, किया चमडे कि पुतली ॥ २ ॥

स्वास-स्वास का खंबा बनाया ।
झुला देत एक नारी ॥
जैरामदास कहे सगुण निर्गुण, अगम निगम प्रभू व्यापारी ॥ ३ ॥

भजन २९ (स्वतंत्र)

रहे नही शरीर का भान, तब आवे अंतर का ज्ञान [illegible] ॥टेक॥

सुख दुःख ये सब जाये, हर्ष शोक ये रह ना पाये ।
काम, क्रोध ये सब गल जाये, आशा तृष्णा ये मिट जाये ॥
रमे जीव ब्रम्ह पद मे रममान ॥ १ ॥

ध्यानी ध्याता बने वहांका, दृष्टा बना वो ब्रम्ह जगतका ।
भजन करे वो निरांकारका, खेल खेले सगुण निर्गुणका ॥
पद पाया उसने निर्वाण ॥ २ ॥

विश्व को उसने घर बनाया, जिव जगतको उसने अजमाया ।
सम दृष्टिमे नयन बसाया, क्या किया और क्या उसने पाया ॥
सुधबुध्र ना रही, न रहा ये भान ॥३॥

जैरामदास कहे गुरूकृपा, मार्ग यही है तरने का ।
लेन देन यही है किसीका, ग्यान हुवा निजस्वरुपका ॥
ज्योती चिन्मय और आलीशान ॥४॥

9४०१

भजन १० (तर्ज – मैं तुलसी तेरे आँगन की)

मैं दुःखिया तेरे दर्शन का ।
मिले नही, मिले नही, मिले नही द्वार मुक्तीका ।।टेक।।

त्रास मिटा भिखारी हूं तेरा ।
चैन नही मनमे मायाने घेरा ।।
हाथ बढादे रक्षाका ।। १ ।।

ये तन जर जर त्रस्त हुवा है ।
चिंता ने इसे जकड लिया है ।।
तेरे बिन साथी जिवन का ।।२।।

स्वारथ हीत की करे सब प्रिती ।
जिसे हम समझे सज्जन संगती ।।
तेरे बिन साथी ना किसीका ।।३।।

जैराम कहे मिथ्या ये जग ।
यहां मिलते है लफंगे ठग ।।
गाते गाना मतलब का ।। ४ ।।

भजन ३१ (तर्ज–सुनो प्यारो मेरे मित्रो)

मेरा मै हूं मदतगार,
किसकी आस रखु मैं यार ॥ टेक ॥ मेरा..

अच्छे काम होवे साथी ।
दिलको मिलती शांती ॥
उसमे मिले वही शाश्वती, खोजले स्वहीत का सार ॥ १ ॥

आस पराई जो धरे ।
काज रहे सब अधुरे ॥
घुमे चौऱ्यासी फेरे, रोते रहे जिवन भर ॥२॥

निती जो ऐसी अपनाये ।
दुबदा मे उमरीया खोये ॥
कही ना लगे ठिकाणा, सभी जगह होती उसकी हार ॥ ३ ॥

कहे जैराम छोडो ये ।
माया का झुठा सपना ॥
अपनेमे आपको खोजो, बैठा है तुझमे तारण हार ॥ ४ ॥

भजन ३२ (तर्ज – मेरे अंगने में)

तेरे चरणो की हमे एक आस है।
प्यारा सुंदर नाम, जिवन का विकास है ।।टेक।।तेरे

दिलको सबर दिलाये, संकट मे वो छुडाये।
भुले को राह दिखायें, तो यही तिरथ धाम है ।।१।।तेरे

कितना पतीत वाल्या, वाल्मीक कहलाये।
नाम की महीमा से, ये जगत मे मशहुर है ।। २ ।। तेरे

देखो वेश्या गनीका, उद्धार की जिवनका।
हरि नाम गा कर, किर्ती छोड गई है ।। ३ ।। तेरे

लोहे को पारस छुते ही, सोना बन जाये।
कर्म सुधरने से, भाग्य सुधरते है ।। ४ ।। तेरे

गरीब परिश्रम से, धनी बन जाये।
संत बोल मे तो, हिरे मोती है ।। ५ ।। तेरे

जैरामदास कहे, जिवन का सहारा।
गुरुबीन कोई तो, दुजा ना हमारा है ।।६।। तेरे

भजन २३ (तर्ज- जिंदगी की ना टूटे लडी)

जिन्दगी की ये फिक्र खडी ।
उसमे जिवन की नैय्या अडी ।।
माया का रंग देख मचले जिया ।
इसमे दुनिया है जकडी ।। टेक ।।

समय अनमोल निकल रहा है ।
स्वास देखो तबाह हो रहा है ।।
अंत मे दूर हो जाते बहन भाई ।
क्यो करता है आस पराई २ ।।
जानके अब स्वहीत की घडी ।। १ ।।

"मनवा प्रभू बिना, कोई ना रे अपना"२
जग है ये सारा सपना ।
स्वास्थ का ही जो गाये गाना ।।
पुण्य पाप न देखे नयना ।
आंखे रहकर क्यों अंधा बना२ ।।
जन्म मृत्यू की बेडी पडी ।। २ ।।

कहता जैराम समझो बीना ।
भाग्य उदय कभी होंवे ना ।।
ज्ञान विवेक का ले सहारा ।
अब परखले वतन तेरा२ ।।
छोड दे बाते चढी बढी ।। ३ ।।

३५५) २१

भजन ३४ (तर्ज- जिंदगी कि न टूटे)

नाम जहाज की नैय्या खडी ।
गुरूबीन वो लगेना थडी ।।
किस्मत की आजमाले घडी ।
जन्म मृत्युकी छुटी बेंडी ।।टेक।।

चाहे कोशीश करे वो प्राणी ।
धनी हो या पंडीत हो ज्ञानी ।।
समझे सतसंग बीन संतवाणी ।
आतम ज्ञान बीन कोई ना ज्ञानी२ ।।
शरणागत की किस्मत वो सुधरी ।। १ ।।

"साथी रे श्वास ये व्यर्थ ना गमा" ।
पल घडी का नही भरोसा ।
कब उड जाये तन से हंसा ।।
पल पल मे मन जले फासा ।
झुठा देवे हरदल दिलासा२ ।।
आशा तृष्णा ये पिछे पडी ।। २ ।।

जिव ये पल घडी का मेहमान ।
रात दिन का नही ठिकाण ।।
ईश तत्व की करले पहिचान ।
तब रहेगी तेरी जगमे ज्ञान२ ।।
नाम की महीमा जगमे बडी ।। ३ ।।

गया समय फिर ना मिले ।
कल करने का वो आजही करले ।।
कहे जैराम हरी भजले ।
सत्य मे ही वो सत्य मिले२ ।।
सुधर जाये जो तकदीर बिगडी ।। ४ ।।

भजन- ३५ (तर्ज-बाप्पा मोरया रे)

३५०॥

तु सुख करणी, तु दु:ख हरणी,
दुर्गा तु आदी माता,
तु अनंत रुपी, तु महातपी,
तेरी त्रिलोकी गाथा ॥टेक॥

शरण मे जो कोई आये, संकट से पलमे छुडाये ।
शांती धैर्य तु दिलाये, सुख आनंद को वो पाये ॥
तू ब्रीद रक्षणी, असुर मर्दानी, हले न तेरे बिन पत्ता ॥१॥

निर्धन की भरती झोली, बांझ बने पुत्रवाली ।
तेरा वचन न जायें खाली, श्रद्धा भाव से पुजे सवाली ।
जैसी जिसकी भावना, करे पुरी कामना, वैसी निभाती नाता ॥२॥

बढे पृथ्वी पर अत्याचार, तब तब लेती अवतार ।
सिंह पीठ पर होके सवार, हाथ मे लेके खप्पर ॥
तू तलवार धरी, तू शुभ कारी, भक्तों की विजय करता ॥ ३ ॥

सुनले मेरी तू करुण पुकार, आकर मिटादे भ्रष्टाचार।
जहां वहां फैला अत्याचार, कोई यहां ना मदतगार॥
प्रार्थना जैराम की, रक्षा दिनन की, बचालो धर्म डुबता ॥ ४ ॥

3m011

भजन ३६ (तर्ज – जिवगी न टूटे)

मैय्या निर्धन की भरदो झोली ।
जनता खडी है भोली भाली ।
तुम बिन कोई ना रखवाली ।
जनम जनम की अंखीया भूली ।। टेक ।।

जहां वहां ये दु:ख है खडा ।
घबराये ये मन मनचला ।
राहो मे डाले ये अड़थड़ा ।
धैर्य मिले ना कहो थोडा ।।२
ये उमरीया निकल चली ।। १ ।।

चिंता सताये ये दिन रात ।
शांती देवे कही ना साथ ।।
माया मोहनी ये डाले फास ।
जिवन का होवे ना विकास ।।२
अनमोल घडी ये निकल चली ।। २ ।।

"मैय्या तेरे बिना, कोई ना साथी"।
यह संसार है बुरा ।
कोई काम न होवे पुरा ।।
जहां वहां है स्वार्थ भरा ।
दिखे ना कोई तारण हारा ।।२
तुम बिन मेरा न कोई वाली ।। ३ ।।

जैराम कहे बुझा वो प्यास ।
कुछ ना मांगु चरण की आस ।।
कर जोडे खडा है दास ।
निकलें हंसा रहे तेरा ध्यास ।।
तु ही प्रण निभाने वाली ।। ४ ।।

भजन ३७ (तेरे-मेरे अंगने मे तुम्हारा क्या काम है)

मेरे नैनो मे नगीना एक शाम है।
वो है मुरली वाला, मुक्ती एक धाम है ॥टेक॥

जिसके भाव जैसे, उसको ही मिले वैसे।
हृदय मे बिठालो, उसका ही अमर नाम है ॥ १ ॥

मिरा हुअी पगली, प्रभुमे मतवाली।
कृष्ण मय होकर, देखे एक ब्रम्हा है ॥ २ ॥

झुठे बेर शबरी के, प्रभूने खाये।
प्रेम वश होकर, प्रभूता भुलाये है ॥ ३ ॥

जैरामदास कहे निराधार हो मनका।
कर्म बने उजले, उसमे सारा मर्म है ॥ ४ ॥

भजन ३८ (तर्ज-चना जोर गरम)

चल चल जरा जरा, चल चल जरा ॥२
संतो का ये धरम।
जग भर चलते सारे करम पर अपना मानव धरम।
मिटाले भरम ॥
मिटाले भरम भैय्या, सत संग से होगा पार।
मिटाले भरम ॥ टेक ॥

यह पक्ष पाती का मेला, उसमे ही वो जाये भूला ।
निष्ठी नियम से चलता बिरला,
मिटाले भरम ॥ १ ॥

कोई ओछी करे बाते, कोई अपने को सुधराते ।
कोई फुटी दरारे लाते, वो यहां के न वहां के रहते ॥
मिटाले भरम ॥ २ ॥

वो इनकी भावना इनको खाये ।२
खुद को समझे है ज्ञानीये ॥२
हो इनके मनमे भरा है काला२, कैसे समझे दूजे को उजला२
हुआ पतन पतन,
अबतक इसने स्वहीत जाना, रिता जाये जीवन
मिटाले भरम ॥ ३ ॥

जिसका कर्म होवे गंदा ।२
उसको कैसा बचाये खुदा ॥२
ओ इनका झुठ मुठ का धंदा, इनका झुठ मुठ का धंदा ।
खोजो मरम मरम,
तत्व से हम एक बनें है, परखो निज धरम ।
मिटाले भरम ॥ ४ ॥

ये जग है माया ममता का, ममता का भई ममता का ।
ये खेल बना है धोके का, धोके का भई धोके का ।।
तरना है तो ये सत संग है ।
फिरत के लिये ये लिनता है ।।५।। ये जग है

सत कर्म से ना जो चलता है ।
दु:ख ही दु:ख को वो पाता है ।।
सुख कैसा ही वो पायेगा ।
कैसा तु नाम कमायेगा ।।६।। ये जग है

प्रिती को नही समझेगा, गंवार कहायेगा ।
ना सच्चाई है, ना तो ख्याती है ।
बस धरती पर तु बोझ है ।।
विवेक दृष्टि को बंद किया, मानवता को ना सिख पाया ।
"अपने को आप परखते जा ।
समझाये तुझको य जैराम" ।।
यही गीत हरी गाते जा ।
जिवन उजला बन जायेगा ।।७।। ये जग है.

भजन ३९ (तर्ज– माया ठुमका)

३५६२१

दोहा

भुलादो अपनी भुली आदत को; सोच समझलो निती नियमको ।
धरम करम से चलने लगोगे, सुभाव गंधा, होवेगा उमदा ।।
सारे जगका SSS सारे जगका बदल दो हाल देवता ।
भुल चला है मानव करम अपना ।। टेक ।।

ये कोढी रे कोढी, बाते चढी बढी२ ।
बुरे कामो मे देखो, उमर ये ढली ।।
देख माया के मेले, भुखे रहे भले ।
जिम्मेदारी न समझा, थोडी न थोडी२ ।।
मार डाला है भुखा परिवार अपना ।। १ ।।

कोई काम भी ना, कोई राम बीना ।
ये छंद भंद का नाटक शुरु किया ।।
जैसे बिज बोया, वैसा फल पायेगा ।
तेरा तुही भरे, तेरा तुही मरे, साथ ना आयेगा३
भला कैसा निकले ये झुठा सपना ।। २ ।।

जैरामदास कहे, धरती भार हुवे ।
हित अपना न किये, पर काम ना आये ।।
असत्य बोले, बजाये झुठी गाले ।
किया करनी का. फल तु खुद पायेगा३ ।।
भुला निती नियम को बना दानव ।। ३ ।।

२१८२८

भजन ४० (तर्ज- मारा ठुमका)

मेरे देश की हालत सुधारो देवता ।
भुल रही है जनता धरम अपना ।। टेक ।।

सट्टा जुवां खेले, दारु मे मतवाला ।
घुस खोरी की हरदम ये चाले चले ।।
मेहनत वाले बेहाल, दलाल माला यें माल ।
सच्चाई निकल चली ये देश बचेगा३ ।।
तेरे मेरे का देख रहे है सपना ।। १ ।।

भडक रही ज्वाला, क्रोध करे हल्ला ।
हो गया है स्वारथ का ये बोल बाला ।।
रो रही है क्या, पिछे लगी है माया ।
त्रस्त हो गया जीवन कैसा बचेगा३ ।।
लोभ किया आशा तृष्णा मे फसता ।। २ ।।

ऐसा चलता रहे, समाज कैसा जीये ।
बदलता है राहे ये कुटनितिकी ।।
दास जैराम कहे, सच्चाई पास रहे ।
बंधु भाव के नाते से सुख मिलेगा३ ।।
इन विचारोसे ना चले तो आयेगा रोना ।।३।।

3५६२१

भजन ४१ (तर्ज– प्यारा हिंदुस्थान है)

एकता मे बल है, फुट मे हलचल है।
इस मर्म को ना समजे तो, पिछे सारी जंजाल है ॥ टेक ॥

भरी अनिती कौरव मे, भुल गये गुमान मे।
अहंकार के ज्ञान मे, दुसरो का बुरा करने मे ॥
अपने स्वारथ के लिये, जगमे बुरे बोल है ॥ १ ॥

जीस घरमे है तेरा मेरा, वहां शैतान का बसेरा।
कान्न ने डाला वही पर डेरा, खाये बीन किसीको न छोडा ॥
दु:ख के बीना वहां, सुख का बेहाल है ॥ २ ॥

लालच ने तो गारद किया, रावण ये मारा गया।
निती नियम से ना चल पाया, करनी के फलको पाया ॥
अच्छे कर्म मित्र है, अमीट किर्ती उज्वल है ॥ ३ ॥

जैराम कहे न्याय तिरथ मे जो प्राणी नहायेगा।
जीवन अपना उज्वल बनाकर, परम्पदको पायेगा ॥
छोडो झुठे विचार ये, बोल यही अनमोल है ॥ ४ ॥

३५६२१

भजन ४२ (तर्ज- प्यारा हिंदुस्थान हैं)

भक्तो का भगवान है, प्रभू भक्तो की शान है ।
इसी मर्म को जाना जीसने, वो ही इंसान है ।। टेक ।।

आओ सबको सिखायेंगे, अज्ञानता को मिटायेंगे ।
अध्यात्म के निती से, देश धर्म बचायेंगे ।।
सही राह के चलने से, सभी का कल्याण है ।। १ ।।

दानव निती मिटायेंगे, मानव धर्म सिखायेंगे ।
बंधु भाव की प्रिती जोडकर, बलबुत्तो पर जियेंगे ।
सुकर्म के निती से ही, जगमे अमर नाम है ।। २ ।।

चली फैलती अनीती, निकल रही दया शांती ।
कर रहे है आयासो, बढ़ रही गुंडा वृत्ती ।।
काला बाजार घुस खोरी से, सभी का नुकसान है ।। ३ ।।

जागो बुढे वीर जवान, मजुर भाई और किसान ।
वतन का जतन करना है, असुरो से टकराना है ।।
जैरामदास कहे रे बाबा, इमान मे उत्थान है ।। ४ ।।

३५५ २१

भजन ४३ (तर्ज- मेरा दिल अब)

जिसने फीक्र न किया जींदगी की ।
क्या दया लेगा पर जीवों की ।। टेक ।।

कभी न रखा समय का ज्ञान, इसे होवे परेशान ।
अज्ञानता की दिखाये शान, मनमे रखे वो गुमान ।।
किया हानी इससे परीवार की ।। १ ।।

ठोकर खाये जहां वहां, कदर ना मिले कहां ।
निती है निठ्ल्ले पन की, दुबदा मे जाये वहां ।।
जिम्मेदारी न समझे जीवन की ।। २ ।।

राम से गया काम से गया, उमर व्यर्थ मे खोया ।
मानव कर्म पुरा न किया, जग मे हंसी किया ।।
चले चाल वो दानवता की ।। ३ ।।

जैरामदास कहे एसे लोगोसे, समाजमे हो रही हानी ।
अनिती से रोका न जाये, होगी निसंतानी ।।
बात बताया मैं सबके हितकी ।। ४ ।।

भजन ४४ (तर्ज- शाम के रंग मे)

३४५८१

जिसके पास है पक्षपात ।
उसने किया अपना नाश ।। टेक ।।

स्वारथ देखे अपना हरदम ।
चालाकी की बाते जम जम ।।
डाले दुसरो पर ये फास ।। १ ।।

परवा नही है न्याय अन्याय ।
अपना ही वो गाना गाये ।।
खुन चुसने की रखे आस ।। २ ।।

जात पात के करम मे भुले ।
किसी की ना फिक्र वो रखे ।।
लाच लुचपत मे जीसका वास ।। ३ ।।

जैरामदास कहे ठग निर्दयी ।
किसी जीव की दया न आयी ।।
बेमान ने दिया सबको त्रास ।। ४ ।।

भजन ४५ (तर्ज – गुण दोष हमारे)

दिखने को सुन्दर गद्दारी अंदर ।
ईमानदार की कभी किया न कदर ।।टेक।।

हरदम मुखसे मीठा बोले ।
फसाते रहते भोले भाले ।।
ऐसे है ये ढोंगी बगले, पराये धन पर रखे नजर ।। १ ।।

ब्रम्हज्ञान की बताये बात ।
दिलमे रखे वो पक्षपात ।।
दिन दु:खियो दिया न साथ,न्याय व्यक्ती की सूना न उजर।।२।।

गाल बजाये लंबी चौडी ।
दया धरम न मन मे कौडी ।।
किसी जीव से प्रीत ना जोडी, स्वारथ गाना शाम गजर ।।३।।

कुछ ना करता काम धंदा ।
चुगली चहाडी मे जाये रींदा ।।
कहे जैराम ऐसे गद्दारोंसे, हरदम रहो तुम होशियार ।।४।।

भजन ४६ (तर्ज – ईश्वर को जान)

परिस्थितीसे मानव, जगमे गुजर रहा है ।
चैन ना मन मे थोडी चिंतासे जल रहा है ।।टेक।।

कहीं कहीं गिरे दुष्काळ, कही कही आरही बाढ।
कहीं पर गिर रहे डाके, कही कही हो रही लुटमार ।।
देखकर अत्याचार, अशांती से रो रहा है ।। १ ।।

जहां तहां फूट की दरारे, स्वारथ मे डुबे सारे।
क्रोध के ताने मारे, मानवता को बिसारे ॥
पुण्य पाप का विचार, निती खो रहा है ॥ २ ॥

बढ रही नई ये घटना, दानवताकी सराहना।
रहम को नही पहीचाना, निर्दयी है ये बना ॥
अपनी सेखी बतावे, विनाश मे बह रहा है ॥ ३ ॥

कहे जैराम चेत प्राणी, संत से कर जिंदगानी।
समझ ले मेरी बानी, न समझे तो होगी हानी ॥
अपना भला जो चाहता, सतसंग दरबार भरा है ॥४॥

३५६२१

भजन ४७ (तर्ज–माटी के पुतले)

माटी के पुतले भूल रहा तू एहसान।
पल मे मिटेगी तेरी शान ॥टेक॥

यह घर चिडीया रैन बसेरा, मुंदते अखीया होवे अंधियारा।
रह जायेगा तेरा डेरा, पछतायेगा नादान ॥ १ ॥

वादे बडे तू करके आया, वो ना तूने पुरा किया।
मोह माया के जाल मे फसकर, भूल गया भगवान ॥२॥

कौन तेरे साथ जायेगा, कौन तेरी मदत करेगा।
दिलासा देवे तुझे झुठा, चलती के ये मेहमान ॥ ३ ॥

समय ये सारा निकल रहा है, तेरे मेरे मे उलझ रहा है।
झुठा सपना देख रहा है, आंखे खोल इंसान ॥ ४ ॥

कहे जैराम राम ही साथी, सत्ता बिन हिलती ना पाती।
वो ही तेरी जीवन ज्योती, उसपर दे तु ध्यान ॥ ५ ॥

भजन ४८ (तर्ज–मेरे अंगने मे तुम्हारा क्या काम है)

मेरे गुरुदेव का, अमर बडा नाम है।
उनके ही चरणो मे, मेरा जीवन धाम है ॥टेक॥

कोई जाये तीरथ, तो कोई गुरुव्दारा।
नाम है अनेक पर, सबमें एक ब्रह्म है ॥ १ ॥

जीसकी भावना जैसी, भाये मुर्ती वैसी।
मन मे श्रद्धा ठाम है, उसका ही पुरणनाम है ॥२॥

जैसी जिसकी लगन, उसमें ही होता मगन।
चाहे कोई हंसे, उससे ही क्या काम है ॥३॥

झूके चरणो पर ब्रम्हा, विष्णु, महेश।
विश्व की शक्तियाँ, हुई सारी जाम है ॥४॥

जैरामदास कहे, जिवन का उजीयारा।
गुरु है दयालु, वही दाता राम है ॥ ५ ॥

३५/२१

भजन ४९ (तर्ज– कबके पिछडे हुये हम)

सबके दुखडे, मिटाने आज, यहाँ तन पिसले वैसे सबसे,
वैसे सबसेऽऽऽ
वैसे सबसे, निभाने आज निती सच करले ॥ टेक ॥

बडे मुश्किल से, ये तन मिला है, तन मिटता है, किर्ती रहती है
सत कर्म से फल मिलता है, भ्रांती मिटती है, शांती मिलती है
होऽऽऽ ऐसे ही भावो से, ऐसे ही श्रद्धा से
किचड मे कमल खिले ॥ १ ॥

शांती दया की बानी चलाले, शिल नम्रता दिल में बीठाले
तब जिवन में सुख ही सुख मिले, सच्चाई से सद्‌गती मिले
होऽऽऽ उंचे विचारो से, प्रेम करुणासेऽऽऽ
हीत अपना देखले ॥ २ ॥

अपने परसे जगको पहीचाना, एक सोने के जेवर नाना
हर सबमे एक ही जाना, कहीं ना देखा नया पुराणा
हो कहे जैराम दास, खोज अपने पास,
दुजा न कहीं मिले ॥ ३ ॥

भजन ५० (तर्ज– चरणोमे तेरा ध्यान रहे)

जिस भावनासे, देखो, जिसको,
अपने परसे, देखो उसकों ॥ टेक ॥

मन में उसके विचार जैसे, अनुभव करे वो खुद परसे
परखो उसको मन दर्पन से, तब सुख शांती मिले जीवन को ॥ १ ॥

सज्जनता की नीती है तेरी, सब जिवो से करे प्रिती
शिल नम्रता की बने मती, सबमें देखे ईश्वर को ॥ २ ॥

जैराम कहे हुँ मै जैसा, देखु जगको मैं वैसा
दुजा न कोई कही बसा, खोजो तुम जड और चेतन को ॥ ३ ॥

भजन ५१ (तर्ज–आपको हमसे बिछूडे हुये)

जब तक फिटें न, मन की भ्रांती ।
तब तक मिले ना, सुख शांती ॥टेक॥

तभी जुड़ेगी सब, जिवो से प्रिती, होगी तब ब्रम्हा की मती ।
होवे निसंग भावना, जनम का छुटे जंग पुराना ।
देवे दिलाशा साथ भक्ति का ॥ १ ॥

मन बुद्धीकी वहाँ न चले निर्मल ज्योत अंखड जले
तेल चिराग बीन प्रकाश उजीयारा, चन्द्रसुरज की बढे न कला
जीव को मिले वहाँ मुक्ति ॥ २ ॥

शब्द को जब तक जिव न फुटे, आत्मतरंग की लहर ना उठे
भजन की मस्ती उभरेना डटे, परमानन्द का आनन्द न लुटे
जैराम कहे यह बोध सिद्धती ॥ ३ ॥

भजन ५२ (तर्ज– स्वतंत्र)

शास्त्र पढकर बने विद्वान, अधुरा है उसका ज्ञान
आत्म तत्व की नही पहीचान, कागजमे देखे भगवान ॥ टेक ॥

भ्रम भ्रम में उमर गवांये, यहाँ के रहे न वहाँ के रहे
कहीं ना मिले उसको ठिकान ॥ १ ॥

जीन लीचन ने नामनचीना; बेराग उपाधी का गाये गाना
दिखाये जगत को झुठी शान ॥ २ ॥

जीवन ब्रम्ह रस को पिया, तब तक ब्राम्हण वो न भया
पाखंडी है उसका ज्ञान ॥ ३ ॥

संत नाम का ढोल बजाये, झुठी गाल बजाते रहे
खुद की ना उसे पहिचान ॥ ४ ॥

जैंराम कहे परखे बीना, नर भाग्य हीन बना
पिछे लगा जन्म मरण ॥ ५ ॥

मराठी विभाग

भजन १ (चाल – जैसे ज्याचे कर्म)

निराकारी ते स्वरुप, आकारात पहावे ।
सगुण निर्गुण दोन्ही, समरुप पहावे ।। ध्रृ.।।

श्रद्धा भाव ते ठेवावी, मनामध्ये भाव पूर्ण ।
कुठे ना पडे उण, सर्व ठायी आत्म खुण ।।
जे जे दिसे ते डोळा, त्याला देव रूप मानावे ।। १ ।।

जळी काष्टी पाषाणी, एक लक्ष ठेवावे ।
ब्रम्ह असे ब्रम्हांडात, अंश असे सर्व भूतात ।।
त्रिकुट शिखरी जीवा, शिवासी मिळवावे ।। २ ।।

दृष्टा होवूनी तिथला, अमृत ग्रहण करावे ।
चिन्मय ज्योती अगोचर, उभा उन्मयी भरतार ।।
अर्ध नारी नटेश्वर, लिला तिथली पहावे ।। ३ ।।

जैराम म्हणे निर युद्धात, विश्व भरून उरले त्यात ।
आजन्मा तिथे रमतो त्याचे हाती सर्व सुत्र ।।
ही अनुभवाची मात, निराकारी भजन करावे।। ४ ।।

भजन २ (चाल– तुझ्या मागून मी येतो)

भक्तीचा मार्ग धरशील का रं ।
देवासी नाता जोडशील का रं ।।
अरे खोटाड्या वाईट सवय तु सोड, पाठी मागे काळ ।। धृ.।।

मिळाली ही संधी अनमोल मोलाची ।
जिवाच्या सुटकेची वेळ मानवाच्या तरण्याची ।
पुर्वीचे ते पुण्य लई जन्माचे पदरी ।
भेटण्या श्रीहरी करी विचार तु मनी ॥
राम नामी तु लागशील का रं ।
मी तु पणाला सोडशील का रं ॥
अरे भुताड्या सोड, मनाचा काळ, यात नाही बरं ॥ १ ॥

कां तु भुलतो मायावनी, आस सुखाची धरोनी ।
वाईट कामा होईल हानी, जाशील तू रे अधोगती ॥
काम क्रोध हे पहाड ।
आळवे उभे वाटेवर ॥
अरे चालतांना त्रास होई फार, दु:ख हे डोक्यावर ॥ २ ॥

हितासी अनहीत, अनहीतासी जान हीत ।
जोडली ही प्रिती, कैसी झाली तुझी मती ॥
भुलतो तु आंधळ्या, डोळे राहुन आंधळा ।
विवेक दृष्टि बंद केली, कुत्ता रूधीर पाही हाडातुनी ॥
म्हणे जैराम सत्यात तथ्य ।
तिथे आहे तुझे स्वहीत ॥
अरे बडबड्या कशाला खेळतो फुगड्या मन लावी भजनात ॥३॥

भजन ३ (चाल– एक जीवन सहारा)

मन रमे माया काशी, जन्म मृत्यू या जिवाशी ॥
जिव फिरे चौऱ्यासी, सुख दु:ख हे पाठीशी ॥धृ.॥

मोह लोभ अहंकार, दावी जोर हा जार जार ।
संसाराच्या गुंथा गुथी सृष्टि सौंदर्य मनोरंजन ।
कर्म भुलला स्वहीताचा, नाडला मानवा जन्मासी ।।१।।

चैन नाही कोण्या ठायी, तुझे माझे गाणे गाई ।।
आशा तृष्णा मिटत नाही, अंतकाळी कोण ग्वाही ।।
ओळख नाही हीत अनहीताची वैरी झाला देवासी ।।२।।

विवेक दृष्टी बंद करून, कुत्रा रक्त पाडी हाडातुनी ।
चावून तोंड जाई छीलुन, ईजा भोगी महान ।।
डोळे असुन आंधळे जन, भुलले क्षणीक सुखा पाई ।।३।।

मन रमे आत्मा ठाई, पर ब्रम्ह नित्य पाही ।
जीव ब्रम्ह रस पेई, आनंदाची सीमा नाही ।।
जैराम म्हणे गुरु कृपा, शांती मिळे मनासी ।। ४ ।।

२१४ भजन ४ (देव बाजारचा भाजीपाला)

मागे पडला समाज, पुढे आणायचे आज ।
तेव्हांच टिकुन राहील स्वराज हो ।।
तन-मनाने करायचे काज हो ।। धृ. ।।

अज्ञानी मानवाला ज्ञानाची गरज ।
बुद्धि जीवी मानवानी निभवावा फर्ज ।।
तेंव्हाच येईल खरे राम राज ।
खरे ज्ञान देऊनी मिटवा हा मरज हो ।। १ ।।

जात पात पक्षपाताला मिटवावे ।।
माणुसकीचे धडे सर्वांना शिकवावे ।।
दिन दुबळ्याचे हित तिथेची पहावे ।
तेंव्हा राहील देशाची लाज हो ।। २ ।।

गरीब अमीर भेदभाव जोवरी न मीटे ।
काम क्रोध लोभ तोवरी न फीटे ।।
बंधु भावाची कृती तेंव्हा ना उमटे ।
सुखी जीवन करायचे काज हो ।। ३ ।।

जैरामदास म्हणे अज्ञान भ्रांती ही सोडा ।
सत् कर्माशी नाते हे जोडा ।।
तेंव्हाच मिटेल ही अज्ञानाची पिडा ।
चुकवा मातृभुमीचे कर्ज हो ।। ४ ।।

भजन ५ (चाल– राम पियारो साथी)

मानवतेची भुलली कथा ।
जातीयतेची ही व्यथा ।।ध्रु ।।
मानव ..

34621

पक्षपातीचे गाने हा गाई, संताचे ऐकुन नाहीरे ।
जैसा आले मनी तैसा हा चाले, पाहीना अपुल्या हितां ।। १ ।।

इंद्रियाचा हा गुलाम झाला ।
नियम संयम बिसरला ।।
कर्म धर्म विसरूनी गेला, रड आला यांचे माथा ।। २ ।।

भुता सारखे अंगी हे गुण ।
वाईट कामी फिटे मन ॥
अनमोल आयुष्य गेले निघुन, साठा पुण्याचा रीता ॥ ३ ॥

दया धर्माकडे लक्ष न याचे ।
लोभ परधनाचे ॥
व्यवहार याचे क्रुर पणाचे, काही न आले हाता ॥ ४ ॥

जैरामदास म्हणेरे बाबा ।
जन्म घेऊनी भूभार ॥
पाठीशी लागली येर झार, नष्ट झाला पुण्य साठा ॥ ५ ॥

भजन ६ (चाल– भोळया गिरीजा)

34521

ज्याचा जन्म बारे झाला ।
त्याचा मृत्यू आहे ठरला ॥ धृ. ॥

का भुलतो रे त्या दिवसाला, ज्या कामाला तू रे आला ।
खोवू नको त्या वेळेला ॥ १ ॥....

नाशीवंता साठी झटपट करतो, वरच्या रंगी कां तू भूलतो ।
त्याचा विचार नाही केला ॥ २ ॥....

कळते पण तुज वळत नाही, म्हणुनी फिरतो दिशा दाही ।
स्वहीत अपुले तू चुकला ॥ ३ ॥....

ईश्वराचा तू रे वंश भुलला, तू रे त्या ब्रिदास ।
बळी जाशील काळाला ॥ ४ ॥....

जैराम म्हणे अविनाशी, जन्म मरण नाही तयासी ।
ओळख तूं त्या पदाला ॥ ५ ॥

भजन ७ (चाल– भोळया गिरीजा वराला)

जिवनाचे हे रे खेळ ।
पल घडीची ही वेळ ।। धृ.।।

क्षणात टपुनी नेतो काळ, कोण होती तुझे सकळ ।
आता तरी डोळे उघड ।। १ ।।

जग सर्व हे पाणी बुडबुडा, तैसी सृष्टिची घडामोड ।
जैसे कर्म तैसे फळ ।। २ ।।

कुणाचे कुणी इथे नाही, आपुले आपण शोधुनी पाही ।
आत्मा ठाई तु रे बळ ।। ३ ।।

जे जे गेले ते ते आले, पाठी जन्म मरण लागले ।
गुरु कृपेवीन ना टळे ।। ४ ।।

जैराम म्हणे एक कैवारी, त्याचे हाती सुत्र दोरी ।
आपुले शोधी वारे स्थळ ।। ५ ।।

भजन ८ (भोळया गिरीजा वराला)

माझा राम माझ्या पाशी ।
जगती वेळोवेळी मजसी ।। धृ.।।

अंतर बाह्य त्यांचे खेळ ।
आकार आणि निराकार ।।
परखल्याविण खूण कैसी ।। १ ।।

पती पत्नीचे बोल जैसे ।
इतरांना कळे कैसे ॥
अंतरी माझी प्रित तैशी ॥ २ ॥

तत्व समझे तत्वज्ञानी ।
काय कळे शास्त्र वाचुनी ॥
धरी तू संत संगतीशी ॥ ३ ॥

जैराम म्हणे वस्तु अेक ।
बहुरुपी घेई रुपे अनेक ॥
बिरला जाणतसे त्याशी ॥ ४ ॥

भजन ९ (चाल- माझीया हृदयाच्या)

शब्द हेची ब्रम्ह आहे ।
ओळखल्याविण भ्रम ना जाय ॥ धृ.॥

स्वहीत अपुले तिथे पाहे ।
तेंव्हा तुझी लागेल सोय ॥
नाना जाती नाना पंथी, देह धर्माचे नाते ॥ १ ॥

निष्काम भावना आत्म्या पोटी ।
निर्जर वनी आहे निवृत्ती ॥
पंच प्राणाच्या होवूनी ज्योती, निर्मळ स्वरूप तू पाहे ॥२॥

शब्द अशब्दा चे हे खेळ ।
अजपा जप जपी माळ ॥
सोऽहं नामाचे करी उच्चारण, काळ न बाधे तेथे ॥ ३ ॥

दृष्टा अदृष्टा होशी शहाणा ।
मिटे तेंव्हा मी तूं पणा ।।
लागेना मन बुद्धीचा ठिकाणा, अंती तुझा तूच राहे ।। ४ ।।

भजन १० (चाल– कशाला काशी जातो)

34621

ज्याचे पाशी सर्वांचे हीत, पूर्ण होई मनोरथ ।
तीथे मिळे त्याला तथ्य ।। ध्रृ.।।

विचारा पासून आचार घडे ।
संगतीने मिळे फळ ।।
चांगले वाईट त्यांना कळे ।
पहावे सत्य – असत्य ।। १ ।।

ज्या बोलानी मिळे शांती ।
तिथे करावी वस्ती ।।
तिथेच घ्यावी बा प्रचिती ।
नाही तर सर्व मिथ्या ।। २ ।।

कुणी कुणाचे वैरी नाही ।
कुणी कुणाचे मित्र नाही ।।
कुणी कुणाचे गोत्र नाही ।
ठेवा सद्‌गुणी मत ।। ३ ।।

जैरामदास म्हणे रे बाबा ।
आपल्याहून जग पहावे ।।
जिथे तुझे असे हित ।
मिळे तिथे सतगत ।। ४ ।।

भजन ११ (चाल– अभंग)

जन्म झाला माझा, देवा कुणाच्या घरी ।
जिवन हे दुर्वाडी, जन्म भरी ॥ धृ.॥

रात्रं दिवस लागले, पाठी काम काम ।
आला नाही राम, मुखी माझ्या ॥ १ ॥

केली नाही सेवा, देवा तुझी भक्ती ।
कैसी मिळे शांती, मनी माझ्या ॥ २ ॥

नाही ज्ञान नाही बुद्धी, कैसी करुं तुझी भक्ती ।
अंगी भरले मी तू पण, कैसे गाऊ तुझे गुण ॥३॥

कैसी करू तुझी पुजा, देह नाही आला तुझ्या काजा ।
जैराम दास म्हणे ऐसा मी अभागी,
दर्शन देई वेगी पांडुरंगा ॥ ४ ॥

भजन १२ (चाल– कशाला पंढरी जातो)

जिभेवरी सरस्वती नाचे, संताचे शब्दावाचे ।
गणना न करी कोणी त्याचे ॥ धृ.॥

बोला मध्ये अमीट शक्ती ।
सर्वांना मीळे शांती ॥
उपदेशाने मिटे भ्रांती, कल्याण मुमुक्षाचे ॥ १ ॥

रवि शशी मंदावले ।
शास्त्र पुराण थकले ॥
ब्रम्हा विष्णु ते झुकले, अंत न लागी तयाचे ॥ २ ॥

वृत्ती मध्ये दैवी गुण ।
सगुण आणि निर्गुण ।।
जड-चेतनाचे निरक्षण, ज्ञान हंस बुद्धिचे ।। ३ ।।

जैराम म्हणे तत्वज्ञानी ।
तत्व सोडुनी जाती जनी ।।
अमर राही त्यांची कहानी, नाते हर युगाचे ।। ४ ।।

भजन १३ (चाल- लाडक्या पुंडलीका भेटी)

जोवरी तत्व ना पटे ।
तोवरी भ्रांती कशी मिटे ।। ध्रु. ।।

कुणी असो वा आई बाप ।
स्त्री असो वा असो भ्रात ।।
गुरु असो वा असो शिष्य, शब्द मिळे ना जिव्हाळ्याचे ।। १ ।।

जन्म भरी केला संग ।
जाणे नाही त्याचा रंग ।।
जिवन झाले त्याचे तंग, गुण अंगी पाषाणाचे ।। २ ।।

जिवात जीव का घालावा ।
आत्मा शोधूनी पहावा ।।
तेणे सोहळा पुरवावा, फळ घ्यावे संगतीचे ।। ३ ।।

जैराम म्हणे दुध पाणी ।
मिळे ते रे नम्रतेनी ।।
कल्प विकल्प ते टाकुनी, मर्म जाणे अंतरीचे ।। ४ ।।

भजन १४ (चाल–अगर है ग्यान को पाना)

३५/२१

सुखाचा दिवस पाहण्यासी,
मानवा काम घे हाती,
सोडूनी सर्व ही भ्रांती,
कर जिवनाची उन्नती ।। धृ. ।।

कर्मापासूनी तुझ्या भाग्याचा उदय ।
ध्येय ऐसा ठेवी तू ।
मिळो सर्वांना सुख शांती ।
सु विचार आणि सद्‌बुद्धि ।। १ ।।

परहीतात असे तुझी शान ।
जन तुला जय जयकार करती ।।
देह झिजवी चंदना परी ।
मुखाने भजी हरी हरी ।। २ ।।

तनु त्यागीता राहे ।
तुझी जनामध्ये किर्ती ।।
म्हणे जैराम सर्वांच्या हितात ।
तुझे हित भू-वरती ।। ३ ।।

भजन १५ (चाल– छू लेने दो)

३५६२१

मानवास माणुसकीचे गुण, त्याचे जन करती वंदन ।
त्याला कसली ना पडे उण, सर्वा ठायी त्याला अभिनंदन ।।ध्रु।।

चंदना परी झीझवी देह, मुळीच नाही भेद भाव ।
पोटी दयेचा असे ठाव, कोणी असो रंक राव ।।
करी आत्म मंथन, कल्याणाचे करी संशोधन ।।१।।

राम पाहीले आपुले डोळा, सर्व जिवाशी पुरवी लळा ।
भेदभाव सोडूनी मनी मोकळा, नैनी बैसवीला तो सावळा ।।
एक समान सज्जन दुर्जन, मिळविला राम रतन धन ।।२।।

स्वप्नी न पाहीले एका वाचुनी, जरी थडी काष्टी पाषाणी ।
प्रेम न सुटे पती, पत्नी, तसेच जागृती स्वप्नी ।।
जैराम म्हणे अंतरी राम, तोची माझा जिवीचा जिवन ।।३।।

भजन १६ (तर्ज – तू ही सागर)

निष्काम कर्म आत्म्या पासून, ते ठेविले आंत ओतुन ।।धृ।।

शोध केला साधू संतानी, चालविली तत्व वाणी ।
सुखी झाले त्याने हे प्राणी, सर्व हित भरले त्या ठिकाणी ।
आहे उरले विश्व भरून ।। १ ।।

स्वनिर्मीत संत भाषा, आहे सिमीत ग्रंथ गाथा ।
नित नूतन त्यांचे ज्ञान, अणू परमाणू शक्ती महान ।
ऐसे त्यांचे चेतन विज्ञान ।। २ ।।

अनुभवाने देव उभा केला, भाव विटेवर बैसविला ।
इडा, पिंगला, भिमा, चंद्रभागा, वेढा घातला पंढरीला ।।
पुंडलीक विवेक जाण ।। ३ ।।

आदि शक्ती रुखमाबाई, विठ्ठल नांदे ठायी ठायी ।
आकारातून निराकार पाही, गुरुच्या शरणी जाई ।।
चौऱ्यासी तुटे बंधन ।। ४ ।।

जैराम म्हणे संशय फिटला, जिवंत असूनी मेला ।
आपुले मरण पाही डोळा, पुर्ण झाला त्याचा सोहळा ।।
धन्य झाला जगी येंऊन ।। ५ ।।

भजन १७ (चाल – पंडीतजी मेरे)

देव देवळात देऊळ देवात, शोधून पहा तेंव्हा फिटे मात ।। ध्रु ।।

सगुण निर्गूणाचे हे खेळ, आकार आणि निराकार ।
शिव शिवाचे हे स्थळ, ओळखी बिन मिळे ना सार ।।
माया ब्रम्ह वेगळाले, एक मेकाविन काम न होत ।। १ ।। देव...

रुप आहे स्वरुपात, तत्व आहे तत्वात ।
हेच विशेष मर्म त्यात, जन्म मरण नाही जिवात ।।
अज्ञानाचे हे सारे पसारे, भुलले त्याच भ्रांतीत ।। २ ।। देव..

जुणे पुराणे देह हा असे, आयुष्याचे हे खेळ ।
म्हणुनी ठेविती वैर भाव, याचाच जगी चालला गोंधळ ।।
माझे तुझे भेद ना मिटे, तो वरी येईना अनुभवात ।।३।। देव..

आरस्यातील प्रतीबिंब, दुजे दिसे पाहताना ।
धरावे जाता हाताने, सापडेना काही केल्याने ।।
ज्याचा अनुभव त्याला आला, जैराम म्हणे ठेवा लक्षात ।।४।। देव

भजन १८(चाल– साईनाथ तेरे हजारो)

चला आई बापा जाऊ पंढरपुराशी ।
विठ्ठलाची भेट घेऊ, चुकविण्या चौऱ्यासी ।। ध्रु ।।

पंढरपुराची महिमा अपार, विठ्ठलाचे दर्शनाने दुःख होती दूर ।
किती लोक आवडीने जाती पंढरीसी हो ।। १ ।।

पंढरपुराशी असे चंद्रभागे वेडा, विटेवरी उभा सावळा तो भोळा ।
आवडीने लोक येती पंढरपुराशी ।। २ ।।

आषाढीची एकादशी यात्रा मोठी फार, हरीच्या नामाचा होत
असे गजर ।
जन्म सफल करण्या जाते पंढरीशी ॥ ३ ॥

गावो गावाहुनी संत लोक येती, पंधरादिवसाची वारी देवदर्शन
घेती ।
तिर्थं घेऊनीया फिरती घराशी ॥ ४ ॥

दास जैराम म्हणे आलीया जन्मासी, एकवारी करा मुक्त
भवसागराशी ।
भुलू नका कोणी पंढरी जाण्यासी ॥ ५ ॥

भजन १९ (चाल मज भेट सख्या)

शब्दाला जीव हा फुटे ।
जोवरी ब्रम्हाचे ठसे ना उमटे ॥ धृ. ॥

जीव भावना, ही ना मिटे, अणू परमाणू शब्दा मध्ये ।
त्याला कुठे न पडे बाधे ॥ १ ॥

सर्वाभूती पाही जीथे, सहज समाधी बोला मध्ये
तिथे चंद्र सुर्य नटे ॥ २ ॥

मोल त्याचे कोण करील, होई सुखी रटता जीव ।
मुखी जपता, नाम प्रतापे ॥ ३ ॥

जैराम म्हणे अणुवींचा, दृष्टा साक्षी तिन्ही लोकाचा ।
ब्रम्हानंद तोची लुटे ॥ ४ ॥

आरती

(चाल-आरती दिन दयालू की)

संत दर्शने जळती पापे ।।
बधेना तयासी त्रीतापे ।।

कसले ना बाधे तया दुःखे ।। यम दंडातूनी तो चूके ।।
शिल नम्रता जया मुखे ।। करूणा सर्वांची ऐके ।।

(चाल) कशाचीना भीती तया लागी ।।
सद्‌गुरु तयाचा जिवलगी ।।
दुष्ट हा कितीही तपे ।।
महिमा नाम प्रतापे ।। १ ।।

देव भक्ताचा अंकीत ।। पुरवी त्याचे मनोरथ ।।
संवंगडी त्याचा तो होत ।। प्रण त्याचे तो निभवीत ।।

(चाल) तिन्ही देव शरणांगत ।।
ठेवू नका शंका मनात ।।
कुणाचेन त्याने भले होत ।।
सर्वाठाई पाही एक रुप ।।

विकल्प सांडूनी मनाचा । निजध्यास ठेवा आत्माचा ।।
विच्यार पोटी सत्याचा ।। ज्ञान निष्काम भावाचा ।।

(चाल) द्वेत नसावा जिवाचा ।।
सर्वा ठाई वास रामाचा ।।
वृत्ती निवृत्तीत रमे ।।
वाणी चाले गुरु कृपे ।।३।।

जैराम म्हणे अटल निश्चय ।। त्याला नाही कुणाचे भय ।।
अर्पण केला हा देह ।। सर्व ठाई लाभे त्याला जय ।।

(चाल) पद मिळाले अभय ।। संत देव एक होय ।।
एकात पाही अनेक रुपे ।। त्या ज्ञानाचें होईना मापे ।। ४ ।।